वैकुण्ठ में नित्य नहीं रहता। भगवद्भक्त सामान्यतः इस विश्वरूप के दर्शन की इच्छा नहीं करता। परन्तु अर्जुन इसे देखने के लिए उत्कंठित है; इसलिए श्रीकृष्ण इसे प्रकट कर रहे हैं। यह विश्वरूप किसी साधारण मनुष्य के लिए दर्शनीय नहीं है। श्रीकृष्ण की शक्ति से ही इसका दर्शन हो सकता है।

पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा।
बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत।।६।।

पश्य=देख; **आदित्यान्**=अदिति के बारह पुत्रों को; **वसून्**=आठ वसुओं को; **रुद्रान्**=ग्यारह रुद्रों को; **अश्विनौ**=दोनों अश्विनी कुमारों को; **मरुतः**=उन्चास मरुद्गणों को; **तथा**=भी; **बहूनि**=बहुत से; **अदृष्टपूर्वाणि**=पहले न देखे-सुने हुए; **पश्य**=देख; **आश्चर्याणि**=आश्चर्यमय रूपों को; **भारत**=हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ, अर्जुन।

अनुवाद

हे भरतवंशी अर्जुन! यहाँ मुझमें आदित्यों को, अर्थात् अदिति के बारह पुत्रों को, आठ वसुओं को, ग्यारह रुद्रों को और अन्य सभी देवताओं को देख तथा और भी बहुत से ऐसे आश्चर्यमय रूपों को देख, जिन्हें पहले किसी ने देखा-सुना नहीं है।।६।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण का सखा और मूर्धन्य मनीषी होते हुए भी अर्जुन के लिये श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में सब कुछ जान पाना सम्भव न था। यहाँ उल्लेख है कि अर्जुन को दृष्टिगोचर हुए इन रूपों का अन्य मनुष्यों ने न तो श्रवण किया है और न दर्शन ही किया है। अब श्रीकृष्ण स्वयं इन आश्चर्यमय रूपों को प्रकट कर रहे हैं।

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम्।
मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि।।७।।

इह=इस; **एकस्थम्**=एक स्थान में; **जगत्**=ब्रह्माण्ड को; **कृत्स्नम्**=सम्पूर्ण; **पश्य**=देख; **अद्य**=अब; **स**=सहित; **चर**=जंगम; **अचरम्**=स्थावर; **मम**=मेरे; **देहे**=इस शरीर में; **गुडाकेश**=हे अर्जुन; **यत्**=जो कुछ; **च**=भी; **अन्यत्**=और; **द्रष्टुम्**=देखना; **इच्छसि**=चाहता है।

अनुवाद

तुझे जो कुछ भी देखने की इच्छा हो, वह सब मेरे इस शरीर में इसी समय देख सकता है। इस समय जो देखना चाहे अथवा भविष्य में भी जो कुछ देखने की तेरी इच्छा हो, वह सब इस विश्वरूप में देख ले। यहाँ चराचर सम्पूर्ण जगत् दृष्टिगोचर है।।७।।